छठा - अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

अन्त में मेरे लघु शोध प्रबन्ध का सार रुप में निचोड यह है कि हिन्दी लघु उपन्यास एक सर्वथा स्वतन्त्र मौलिक विधा है। लघु उपन्यास कहानी से बृहत् और उपन्यास से लघु होता है। लघु उपन्यास का उदय समय की मांग को लेकर हुआ है। मानव कम समय में अधिक से अधिक आनंद प्राप्त करना चाहता है उसकी यह प्रवृत्ति लघु उपन्यास पर लागू होती है। लघु उपन्यास सस्ते मूल्यों में मिलते है और वह अधिक पाठक गण पढते हैं। लघु उपन्यास किसी यात्रा सफर या रात में सोने से पूर्व पढा जा सकता है। लघु उपन्यास मनोरंजन का एक साधन भी है। लघु उपन्यास का कलेवर छोटा होने से उसमें उपकथाएं नही रहती। खण्डकाव्य के समान जीवन की किसी एक घटना का चित्रण लघु उपन्यास में विद्यमान रहता है। आमतौरपर लघु उपन्यास में तीन या चार पात्र रहते है। वह अपने अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। लघु उपन्यास के पात्रों में मानसिक संघर्ष एवं अन्तर्द्वन्द्व का होना अनिवार्य होता है। पात्रों के कार्यों से ही उनका चरित्र स्पष्ट होना जरुरी है। संवादों में जनसाधारण की बोलचाल की भाषा का प्रयोग हो। संवाद लम्बे चाहे न हो छोटे संवाद कथा प्रवाह को गतिमय बनाते है। संवादों में संदिप्त भाषा ,स्पष्टता,एवं गरिमामयता का होना लघु उपन्यास के लिए अनन्य साधारण होता है। लघु उपन्यास में खण्ड चित्रों द्वारा ही वातावरण निर्मिती को साकार रुप दिया जाता है इसलिए लघु उपन्यासकार को सजग,सचेत रहकर तत्कालिन परिस्थिति को चित्रित करना पडता है। बडे उपन्यासों की भांति देशकाल वातावरण के लिए लघु उपन्यासों में स्थान नही

होता। केवल भाषा के माध्यम से ही लघु उपन्यासकारों को वातावरण निर्मिती करनी पड़ती है। "Style is the man himself " के अनुसार लघु उपन्यास में आज शैलियों के नये नये प्रयोग हो रहे है, अतएव एक लघु उपन्यास दूसरे लघु उपन्यास से शैलीगत पृथकता रखता है। निःसंदेह हिन्दी में आज जितने लघु उपन्यास लिखे गये उतनी शैलियाँ प्रचलित है। श्रीनिवास दास कृत` परीक्षा गुरु` को हिन्दी का प्रथम लघु उपन्यास माना जाता है वह कलेवर की दृष्टिसे लघु उपन्यास ही था। डा.पुष्पपाल सिंह जी से मैंने पत्राचार किया था, उन्होंने बताया था कि, आज अनुसंधानों से पता चला है कि गौरीदत्त प्र का ` देवरानी जिठानी की कहानी` हिन्दी का प्रथम लघु उपन्यास है। प्रेमचंद पूर्व काल से हिन्दी में लघु उपन्यास लिखने परंपरा आज तक निरंतर चलती आयी है। आज हिन्दी लघु उपन्यास विधा ने हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान की है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का द्वितीय अध्याय` शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व है। जिसमें मैंने शिवानी के व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओंपर प्रकाश डालने की चेष्टा की है। शिवानी रविंद्रनाथ टेगोर के शान्तिनिकेतन में उनकी छत्रछाया में नौ साल तक पढी है। वहाँ के संस्कार वह आज तक शिवानी आज तक नहीं भूल पायी है। विवाह के बाद उनके पति ने लेखन कार्य में विशेष सहयोग दिया था। रियासती वातावरण में पत्नी शिवानी जी ने अपने जीवन में जिन जिन घटनाओं को देखा, भोगा उन्ही को अपने साहित्य चयन का विषय बनाया है। शिवानी जहाँ जहाँ घूमी है वहाँ का वर्णन उन्होंने अपने साहित्य में किया है। शिवानी के लघु उपन्यासों को पढकर मैंने एक चीज जो पायी वह यह है कि शिवामी जी ने प्रकार प्रकार के भोजन और स्वादिष्ट व्यंजनों का वर्णन इतनी अच्छी प्रकार से किया है ,मसालों की सुगंध को पाठक अनुभव करता है तो सचमुच उस मोहक रसास्वाद से मुँह में पानी आने लगता है। शिवानी जी ने भारत के सभी प्रदेशों का भोजन देखा और खाया है। राज-रजवाडो,जमींदारों

के यहाँ एक से एक अव्वल व्यजनों को चखा है इसलिए उन्होंने अपने अपने लघु उपन्यासों में तरह तरह के स्वादिष्ट व्यजनों का बखान ही नही किया है बल्कि उनका आदर्श गृहिणी की तरह बनाना सीखा है। शिवानी आदर्श,सुप्रसिध्द लेखिका तो है और उत्तम गृहिणी भी। शिवानी बहुमुखी लेखिका है। महिला उपन्यासकारोंमें शिवानी जी का विशेष स्थान है। हिन्दी कथा साहित्य की विविध विधाओं का उन्होंने कोना कोना छान मारा है। बड़े उपन्यास, लघु उपन्यास,कहानी,संस्मरण ,रिपोतार्ज, यात्रा वृत्त,निबंध ,बालसाहित्य, रेडिओ एकांकी विधा उनके लेखनी की गुलाम बनी है। शिवानी से पत्रव्यवहार में प्रश्नावली में मैंने पूछा था कि `आपकी कौनसी कृति श्रेष्ठतम है ?` उत्तर के रुप में उन्होंने लिखा कि `मैंने सभी उपन्यास ईमानदारी से लिखे है और अपनी कौनसी सन्तान प्रिय नही होती।` इस प्रकार अपनी सन्तान के समान अपनी कृतियों को महत्व दिया है।

लघु शोध प्रबन्ध का तीसरा अध्याय` शिवानी के लघु उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय है।` शिवानी की` करिए छिमा`, चांचरी` और `फिरबे की ?` फिर बे ?` कृतियाँ लम्बी कहानी और लघु उपन्यास की सीमारेखापर होने के कारण मैंने उन कृतियों को लघु उपन्यास के रुपमें प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में समाविष्ट किया है। शिवानी के समस्त लघु उपन्यासों का अवलोकन करनेपर कुछ निष्कर्ष सामने आये वे निम्नकिंत है।

(१) शिवानी के लघु उपन्यासों में कुमाऊ ग्रामीण आंचलों का चित्रण हुआ है। इसलिए कुछ आलोचक उन्हे आँचलिक उपन्यासकार कहते है। लेकिन मेरी नजरों में यह गलत है क्योंकि शिवानी के लघु उपन्यासों में कलकत्ता, बम्बई, महानगरीय जीवन का चित्रण हुआ है इसलिए उन्हे आँचलिक उपन्यासकार कहना गलत है। श्री वृध्दावनलाल को` बुँदेल खण्डी उपन्यासकार` कहा जाता है, उसी प्रकार शिवानी जी को` कुमाऊनी उपन्यासकार` कहना समीचीन होगा।

(२) शिवानी का समस्त साहित्य पर्वतीय जीवन का एक विराट केनवास है।

(३) "विवर्त" लघु उपन्यास में विलायती पृष्ठभूमि का जिक्र हुआ है।

(४) "मोहब्बत" लघु उपन्यास में शिवानी ने महाराष्ट्र के रत्नागिरी का चित्रण किया है। मैं महाराष्ट्र का निवासी होने के नाते प्रस्तुत लघु उपन्यास पढते हुए मुझे बहुत खुशी हुई। शिवानी कुमाऊ की होते हुए भी उन्होंने रत्नागिरी का वर्णन किया है।

(५) नायिकाओं के नामकरण को लेकर शिवानी के कुछ लघु उपन्यासों की अवतारणा हुई है। `किशनुली का ढाँट` (किशनुली), `कृष्णवेणी` (कृष्णवेणी), `विषकन्या ( कामिनी - दामिनी ), `चाँचरी` (बिंदी का एक उपनाम चाँचरी है जो परी के समान सुन्दर है) आदि शीर्षक नायिकाओं के नाम पर है।

(६) शिवानी के कुछ लघु उपन्यासों के शीर्षक कुमाऊ पहाडी शब्दों से संबंधित है उदा. `करिए छिमा`, `कैंजा`, `गैंडा`, `रथ्या` आदि शब्द विशेषकर पहाडों में प्रचलित रुपसे दिखाई देते है।

(७) कुछ लघु उपन्यासों के शीर्षक विधि संस्कार से संबंधित है। उदा. `तर्पण` (मृत्यु परान्त पुत्र द्वारा किये जाने वाला विधि संस्कार) `पाथेय` (वह प्रदीप जो मरनेवाले व्यक्ति को यमद्वार तक प्रकाश देता है।

(८) शिवानी के लघु उपन्यासों की नायिका अपरुप होते हुए पतिता है।

(९) शिवानी के लघु उपन्यासों की नायिका उच्चशिक्षित एवं विलायत से शिक्षा प्राप्त करके भारत आयी है।

(१०) शिवानी के लघु उपन्यासों के नायक ऐश अरामी, भोग विलास पूर्ण जीवन बिताते हुए मालूम पडते है। कुसंगत में पडकर बिगड जाने पर भी नायक पाठकोंकी सहानुभूति प्राप्त करते है। उदा `कैंजा` लघु उपन्यास का नायक सुरेश कुमार भट्ट।

(११) शिवानी के लघु उपन्यासों के नायक उच्चशिक्षित,उच्चपदस्थ अफसर है। उदा` चौचरी` लघु उपन्यास का नायक श्रीनाथ इंजिनियर है। ` कैंजा` लघु उपन्यास का नायक सुरेशकुमार भट्ट वे वकालत पास की है।

(१२) शिवानी के लघु उपन्यासों में संस्कृत गर्भित शब्द,कुमाउ पहाडों में प्रचलित शब्द,तथा अंग्रेजी ,बंगला शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है कहीं कहीं पर बंगला वाक्य दिये है। परंतु लेकिन उन वाक्यों के अर्थ हिन्दी में दिये है। उदा.` पाथेय` लघु उपन्यास में कुछ वाक्यांश दृष्टव्य है। शिवानी का शब्द भंडार अगाध होने के कारण नये - नये शब्द प्रयोगों की व्यंजना उनके साहित्य में दिखाई देती है।

(१३) ` कृष्णावेणी` आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है तो ` मोहब्बत ` पूर्वदीप्ति शैली में।

(१४) शिवानी के लघु उपन्यासों में सत्य और कल्पना का मणिकांचन संयोग दिखाई देता है उदा.` रति-विलाप` लघु उपन्यास।

(१५) शिवानी के लघु उपन्यासों में समाज के विविध पहलों के अन्तर्गत परिवार,विवाह-स्त्री-पुरुष संम्बन्धों के विविध आयाम,धर्म,राजनीति, रोग-व्याधि आदि बिंदू पाठकोंका ध्यान आकर्षित करते है।

लघु शोध प्रबंध का चतुर्थ अध्याय` शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज` है। इस में सर्व प्रथम समाज का संक्षिप्त परिचय देकर बताया है कि समाज शिवानी के लघु उपन्यासों में किस प्रकार से प्रतिबिंबित हो रहा है। सर्वप्रथम हम समाज और व्यक्ति को लेंगे तो उसमें यह दिखाई देता है कि समयानुसार समाज के साथ साथ व्यक्ति के मूल्य भी बदलते आ रहे है और इन सबका चित्रण इनके लघु उपन्यासों में हुआ है। शिवानी के लघु उपन्यासोंमें व्यक्ति समाज से विद्रोह करता हुआ दिखाई देता है। उदा.` किशनुली का ढाँट` लघु उपन्यास में कासी किशनुली का अवैध बेटा कर्ण को अपने बेटे के रुप में स्वीकार करते हुए समाज के बंधनों का पालन नहीं करती। शिवानी के लघु उपन्यासों में

मैंने पाया है कि कुष्ठरोगियों का भी एक अलग समाज दिखाई देता है। शिवानी के लघु उपन्यासों में पहाडी समाज, महानगरीय समाज और विलायती समाज की झांकियाँ प्रस्तुत है। शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित परिवार संस्था के अंतर्गत मैंने पाया है कि, वहाँ पर तलाक की समस्या नही है। तलाक न दिलवाकर भारतीय पति - पत्नी के जन्म - जन्मान्तर के रिश्तों की परम्परा को दोहराया है लगता है कि शिवानी जी भारतीय परिवारों के पति - पत्नी के संम्बन्ध को श्रेष्ठ मानती है। शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित परिवारों में नारियाँ आर्थिक निर्भर दिखाई देती है। किसी घटना या सदर्भ से परिवार टूटते हुए दिखाई देते है। उदा.`तर्पण` लघु उपन्यास में पन्त परिवार। शिवानी के लघु उपन्यासों में आधुनिक,परम्परागत छोटे व संयुक्त परिवार दिखाई देते है। भारतीय समाज की विवाह संस्था महत्वपूर्ण इकाई है। शिवानी के लघु उपन्यासों में परपरागत एवं आधुनिक विवाह पद्धति का प्रचलन हुआ है। विवाह संस्था के अन्तर्गत अनमेल विवाह,कम आयु में लडकियों के विवाह,अन्तर्जातीय विवाह,कुलगोत्र विवाह, बहुपत्नीत्व प्रथा,प्रेम विवाह आदि पक्ष शिवानी के लघु उपन्यासों में दिखाई देते है। शिवानी के समस्त लघु उपन्यासों को पढकर मैंने विधवाओं के सम्बन्ध में देखा है कि किसी भी विधवा का पुनर्विवाह नही कराया केवल`तर्पण`लघु उपन्यास में विधवा से विवाह करने का संकेत मिलता है। सधवाओं को विधवा बनाया है पर विधवाओं को सधवा बनानेका प्रयास नही किया है। शायद शिवानी भारतीय नारी के परंपरागत आदर्श रुपसे ज्यादा प्रभावित रही है या कुमाऊ के संस्कारों को तोडना नही चाहती। शिवानी के लघु उपन्यासों की नायिकाओंको विवाह के लिए उनके समान उच्चशिक्षित वर नही मिलते। शिवानी के लघु उपन्यासों में विवाह के पूर्व कुंडली देखकर विवाह किये जाते है। भारतीय विवाह संस्था आदर्श विवाह संस्था मानी है पति-पत्नी के जन्म-जन्मांतर के रिश्ते होते है जिसका उल्लेख `विर्वत` लघु उपन्यास में हुआ है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के अनुशीलन

से यह स्पष्ट है कि आज समानता का युग है जिसमें विवाहित पुरुष अन्य स्त्रियों के साथ अवैध सम्पर्क स्थापित करने में जरामी संकोच नही रखता वह अपनी पत्नी के साथ आशा नहीं रख सकता कि वह सदैव उसी के साथ रहे (रथ्या)। शिवानी के लघु उपन्यासों में नायिका अपने प्रेमी के साथ अवैध सम्बन्ध रखती है और उसे बचाने के लिए अपने सन्तान की हत्या करवा देती है उदा.` करिए छिमा` लघु उपन्यास की हीरावती)। शिवानी के लघु उपन्यासों में वेश्या उच्च कुलीन सुशिक्षित दिखाई देती है। शिवानी का लघु उपन्यास` पाथेय` में तिलोत्तमा के श्वसुर अपने विधवा बहू पर आसक्त है। स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विविध आयामों से स्पष्ट है कि स्त्री-पुरुष समाज के दो विभिन्न महत्वपूर्ण घटक है। समाज के निर्माण में दोनों की आवश्यकता होती है। दोनों एक दूसरे से जुडे हुए है, वे दोनों परस्पर एक दूसरे के बिना अधूरे है। अर्थ समाज का महत्वपूर्ण पक्ष है जिसका सर्वांगिण चित्रण शिवानी के लघु उपन्यासों में दिखाई देता है। उच्च वर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग के चित्रण शिवानी के लघु उपन्यासों में यथार्थ धरातल पर हुआ है। इसका कारण यह है कि शिवानी के उपर्युक्त उल्लेखित तीन वर्गों को अत्यन्त निकटसे देखा है। शिवानी के लघु उपन्यासों में बेरोजगार की समस्या नही है उदा."कैंजा" लघु उपन्यास का नायक सुरेशकुमार म्टेट।

शिवानी के लघु उपन्यासों की नायिका एवं विधवा भी स्वयं अर्थार्जन करती है चाहे वह सब्जी ही क्यों न बेचे ("करिए छिमा"; लघु उपन्यास की हीरावती) वह किसी के ऊपर बोझा बनकर नही रहती। प्रत्येक समाज का धर्म एक अभिन्न अंग है। शिवानी ने अपने लघु उपन्यासों में धर्म की महत्व को जहाँ दिखाया है वही धर्म के नाम पर जो विकृतियाँ पैदा हो रही है उनकी भी आलोचना की है। समाज में धर्म के नामपर जो अंध:विश्वास या बुरे रीतिरिवाज चले रहे है, उनका जिक्र शिवानी जी ने अपने लघु उपन्यासों में किया है। शिवानी ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता का समर्थन करते हुए परोक्ष रुपसे पाश्चात्य सभ्यता का खण्डन किया है। भारतीय

संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम,जनविश्वास,सामाजिक मूल्य,मानवतावाद के मूल्यों का चित्रण शिवानी के लघु उपन्यासों में उपलब्ध है। शिवानी विलायत जाकर आयी है, वहाँ की संस्कृति का वर्णन उन्होंने अपने लघु उपन्यासों में किया है। उदा.के लिए `विवर्त` लघु उपन्यास में अग्लैंड की संस्कृति दिखाई देती है। लेखिकाने भारतीय प्राचीन संस्कृतिका अभिमान `विषकन्या` लघु उपन्यास में पात्रों के मुख से स्पष्ट किया है। शिवानी पर कुमाऊंनी वातावरण के विधि संस्कारों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। पहाडी ग्रामीण आँचलों में आज भी विधि संस्कार महत्वपूर्ण माने जाते है। शिवानी के लघु उपन्यासोंमें नामकरण,विवाह,दत्तकपुत्र, अन्त्येष्टि,तर्पण,पिंडदान,पाथेय,विधि संस्कारों का चित्रण हुआ है। शिवानी ने `तर्पण` लघु उपन्यास में तर्पण विधि संस्कार स्त्री के द्वारा (पुष्पापन्त) ही किया गया दिखाया है,वास्तव में प्रस्तुत विधि संस्कार मृत व्यक्ति का पुत्र ही करता है। यहाँ पर स्त्री के द्वारा प्रस्तुत विधि संस्कार करना एक क्रांतिकारी कदम है। पहाडों में भौतिक सुविधाए कम होने के कारण वहाँपर रोग-व्याधि का बढना स्वाभाविक है। शिवानी के लघु उपन्यासों में रक्तचाप,एपेंडिक्स, कुष्ठरोग,मधुमेह,क्षय,दिल का दौरा ,कैन्सर,टायफाइड,मिरगी,पागलपण आदि शारीरिक एवं मानसिक रोग व्याधियोंका चित्रण हुआ है। शिवानी के लघु उपन्यासों में कुष्ठरोग अधिक दृष्टिसे दुर्बल लोगों को हो गया है। उदा. `कृष्णवेणी` लघु उपन्यास में भास्करन का परिवार कोढग्रस्त है। दिल का दौरा ,क्षय,रक्तचाप आदि रोग व्याधियोंने उच्चवर्गीय लोगोंको ही ग्रस किया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का पंचम अध्याय है `शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित सामाजिक समस्या` शिवानी ने अपने युग की अधिकांश समस्याओंपर दृष्टिपात किया है। उन्होंने विशिष्ट समस्याओंको अपने लघु उपन्यासों में विवेच्य विषय बनाया है। उन्होंने विभिन्न पक्षों को विशुध्द मानवीय दृष्टिसे देखने की अनोखी चेष्टा की है। शिवानीने जिन समस्याओंका अनुभव किया है उन्हींको चित्रित करने की चेष्टा की है। शिवानी नारी होने के नाते उन्होंने

नारियों की समस्या का जिक्र विशेष रुपसे किया है। आधुनिक युगीन शिक्षित एवं विवेकशील नारी के जीवन के परिप्रेक्ष्य, दहेज, विधवा, परित्यक्त्या, वेश्यावृत्ति, बलात्कारी नारी, गुनाहगार नारी, आभूषण प्रेम, सुंदरता एक समस्या, अवैध मातृत्व, अवैध सन्तान अनमेल विवाह आदि नारी वर्ग की समस्याओंको उठाया है। शिवानी के पुरुष वर्ग की शराबपान, जुआखोरी आदि समस्याओंको भी अपने लघु उपन्यासों में चित्रित किया है। शिवानी ने अन्तर्जातीय प्रेम विवाह के प्रतिकूल परिणामों की ओर संकेत करते हुए यह दिखलाया है कि आज के आधुनिक परिवेश में भारतीय वातावरण अन्तर्जातीय विवाह के लिए प्रतिकूल है। वर्णविद्वेष की अन्तर्राष्ट्रीय समस्याको शिवानी ने विवर्त लघु उपन्यास में दिखलाया है। शिवानी के लघु उपन्यासोंमे बलात्कारी नारी बलात्कार के बाद किसी अन्य पुरुष से विवाह नही करती। वह अपना उर्वरित जीवन वेश्या या कुंठित रुप में बिताती मालूम पडती है। अपने प्रति हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए वह तैय्यार होती है। `तर्पण` लघु उपन्यास की नायिका पुष्पापन्त के द्वारा लेखिकाने नारी को सचेत रहने का मन्त्र दिया है। अनाथ बच्चों की समस्या के द्वारा लेखिका का प्रयोजन स्पष्ट है कि, अनाथ बच्चों को गोद लेकर उन्हें नयी दिशा देनी चाहिए। शराब व जुऐ की समस्या पुरुष को नैतिक एवं मानसिक पतन की ओर ले जाती है। `बदला` लघु उपन्यास में ब्रजकुमार दर का चरित्र उपर्युक्त निष्कर्ष से निकट पडता है। शिवानी के लघु उपन्यासों में व्यक्ति अंधविश्वास से ग्रस्त विशेषता रुढिवादी विचार, मानव विरोधी धारणाए जादूटोना अस्तित्वहीन भूत प्रेत आदि पर विश्वास करते हुए दिखाई देते है। आज के वैज्ञानिक युग में व्यक्ति भाग्यपर विश्वास कर रहा है। सुशिक्षित वर्ग भी ज्योतिषियों के कथनोंपर विश्वास रखता है। राजनीति में शीलभ्रष्ट व्यक्तियों को कोई अधिकार नही है यह `तर्पण` लघु उपन्यास में मन्त्री भोलादत्त की हत्यासे लेखिकाने स्पष्ट किया है। जाति-पाति भेदों की समस्या शिवानी की नजर से नही छूट पायी। आत्महत्या के संबंध में वैयक्तिक समस्या का चित्रण लेखिका ने अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

आत्महत्या के संबंध में उन्होंने अपनी यह धारणा स्पष्ट कर दी है आत्महत्या उन्हीं के लिए उपयुक्त है जो अपना जीवन जी ने में असमर्थ, असफल है। आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नही है। युद्ध समस्या का चित्रण करते हुए शिवानी ने आधुनिक कालीन युद्ध के भयंकर दुष्परिणामों की ओर संकेत किया है। द्वितीय विश्व-युद्ध भयंकर परिणामों को उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से देखा है। अपने अनुभव तथा अनुभूतियों का स्वाभाविक चित्रण शिवानी ने प्रस्तुत किया है।

लघु शोध प्रबंध का टंकन कार्य हो जाने के पश्चात मुझे यह ध्यान आया कि शिवानी-जी के जितने लघु उपन्यास को मैंने पढ़ा है। यद्यपि उनकी नायिकाएँ शिक्षित अत्याधिक सुंदर, चपल, चंचल है परंतु अधिकांश नायिकाएँ मातृप्रेम से वंचित पिता की छत्रछाया में पली और बढ़ी है।

* * *

परिशिष्ट

अ) आधार ग्रंथ सूची

आ) सहायक ग्रंथों की सूची

इ) पत्रिकाएँ ।

ई) पत्र

परिशिष्ट

(अ) आधार ग्रन्थ

१)	करिए छिमा (मेरी प्रिय कहानियाँ से)	- शिवानी	सरस्वती विहार, २१, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, ११०००२ दूसरा संस्करण - १९७४ ।
२)	किशनुली का ढाँट	- शिवानी	हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लि., जी.टी. रोड शाहदरा दिल्ली, ११००३२ प्रथम संस्करण १९७९ ।
३)	कैंजा	- शिवानी	हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लि., जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली, ११००३२, सरस्वती सीरीज, संस्करण १९९१ ।
४)	कृष्णवेणी	- शिवानी	सरस्वती विहार, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली, ११००३२ प्रथम संस्करण १९८१ ।
५)	गैंडा	- शिवानी	हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि., जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली ११००३२, नवीन सरस्वती - सीरीज संस्करण १९८७ ।
६)	चाँचरी (एक थी रामरती से)	- शिवानी	हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लि., जी.टी. रोड शाहदरा, दिल्ली ११००३२, सरस्वती सीरीज, संस्करण १९९१ ।

७)	तर्पण (माणिक से)	- शिवानी	सरस्वती विहार, २१ दयानंद मार्ग,दरियागंज नई दिल्ली, ११०००२,प्रथम संस्करण १९७७ ।
८)	तीसरा बेटा (विवर्त से)	- शिवानी	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली ११०००६ प्रथम संस्करण १९८४ ।
९)	पाथेय	- शिवानी	हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.)लि., जी.टी.रोड दिलशाद गार्डन, शाहदरा,दिल्ली ११००९५ ।
१०)	पूतोंवाली	- शिवानी	हिन्द पॉकेट बुक्स(प्रा.)लि., जी.टी.रोड शाहदरा, दिल्ली ११००३२ सरस्वती सीरीज,संस्करण १९९१ ।
११)	बदला (पूतोंवाली से)	- शिवानी	हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि., जी.टी.रोड शाहदरा दिल्ली ११००३२ सरस्वती सीरीज,संस्करण १९९१ ।
१२)	माणिक	- शिवानी	सरस्वती विहार,२१,दयानंद मार्ग दरियागंज ,नई दिल्ली,११०००२ प्रथम संस्करण १९७७ ।
१३)	मोहब्बत	- शिवानी	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, बी ।४५-४७,कनॉट प्लेस,नयी दिल्ली, ११०००१,प्रथम संस्करण १९८४ ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

१४) रथ्या - शिवानी . सरस्वती विहार,
२१ दयानंद मार्ग दरियागंज
नई दिल्ली ११०००२
दूसरा संस्करण १९७७।

१५) रतिविलाप - शिवानी सरस्वती विहार,
२१ दयानंद मार्ग दरियागंज
नई दिल्ली,११०००२
द्वितीय संस्करण १९७७।

१६) विवर्त - शिवानी राजपाल एण्ड सन्स,
कश्मीरी गेट दिल्ली ११०००६
प्रथम संस्करण १९८४।

१७) विषकन्या शिवानी हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.,
जी.टी.रोड शाहदरा दिल्ली
११०००३२
संस्करण १९७२।

परिशिष्ट -- दो --

अ) सहायक ग्रंथों की सूची ---

१) एक थी रामरती - शिवानी — हिन्द पॉकेट बुक्स, सरस्वती सीरीज संस्करण ।

२) गोदान : विविध सन्दर्भों में — रामाश्रय मिश्र, उन्मेष प्रकाशन रोहतक, प्रथम संस्करण, जनवरी १९८६ ।

३) नालंदा विशाल शब्द सागर — संपादक नवलजी, न्यु इम्पीरियल बुक डिपो, दिल्ली ।

४) प्रसाद साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि — डा. प्रेमदत्त शर्मा, जयपुर पुस्तक सदन जयपुर, प्रथम संस्करण दिसम्बर १९६८ ।

५) प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्धोंका अनुशीलन — प्रा. मा. ए. गवली, अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण १९८३ ।

६) भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युग चेतना — डा. बैजनाथ प्रसाद शुक्ल, प्रेम प्रकाशन मंदिर दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७७ ।

७) महिला उपन्यासकारों की रचनाओंमें वैचारिकता — डा. शशि जेकब, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम संस्करण १९८९ ।

८) राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन — डा. मुहम्मद फरीदुद्दीन, प्रकाशक - दिग्दर्शन चरण जैन, कृष्ण चरण जैन एवम् सन्तति - नई दिल्ली, प्रथम संस्करण अगस्त १९८४ ।

९) सम्कालीन हिन्दी कहानी — सं.डा.प्रकाश आतुर
प्रकाशक - राजस्थान साहित्य
अकादमी उदयपुर, संस्करण १९८८ ।

१०) समाज — मैकाइवर एवं पेज
हिन्दी अनुवादक - जी.विश्वेश्वरय्या
रतन प्रकाशन मंदिर आगरा
तृतीय संस्करण १९७७ ।

११) समाज एक विधिवत विवेचन — हेन्री एम जौनसन
हिन्दी अनुवादक - योगेश अटल
प्रकाशन कल्याणी पब्लिशर्स
लुधियाना दिल्ली, प्रथम संस्क.१९७७ ।

१२) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लघु उपन्यास — डा.गीता
नचिकेता प्रकाशन
९१८७४ मुलतानी ढांडा
पहाड़गंज, नई दिल्ली ११००५५
प्रथम संस्करण १९८२ ।

१३) हिन्दी उपन्यास कला — डा.प्रतापनारायण टंडण
प्रकाशक - हिन्दी समिति सूचना विभाग
उतर प्रदेश, प्रथम संस्करण १९६५ ।

१४) हिन्दी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व — डा.मंजुला गुप्ता
सूर्य प्रकाशन दिल्ली
प्रथम संस्करण १९८६ ।

१५) हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग — डा.त्रिभुवनसिंह
हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी
प्रथम संस्करण, १९७४ ।

१६) हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार — डा.अमर जयसवाल
विद्या विहार प्रकाशन कानपुर
प्रथम संस्करण दिसम्बर १९८४ ।

१७) हिन्दी के लघु उपन्यासोंका शिल्प — माधुरी खोसला,
विजयन्त प्रकाशन, दिल्ली
संस्करण १९७३ ।

१८) हिन्दी साहित्य कोश — सं.डा.धीरेन्द्र वर्मा
प्रकाशक - ज्ञानमंडल लि.,
वाराणसी, प्रथम संस्करण
संवत २०१५ ।

१९) हिन्दी लघु उपन्यास — डा.अमर जयसवाल
विद्याविहार प्रकाशन कानपुर
प्रथम संस्करण १९८४ ।

२०) हिन्दी लघु उपन्यास — डा.घनश्याम 'मधुप'
राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
प्रथम संस्करण १९७१ ।

(आ) पत्रिकाएँ

१) कल्याण — पुराण कथांक संख्या-१, गीता प्रेस गोरखपुर।

२) धर्मयुग — १६ मार्च १९९२ (टाइम्स ऑफ इंडिया) प्रकाशन)।

३) वही — १५ अक्तूबर १९९२ वही।

४) वही — १ नवम्बर १९९२ वही।

५) मधुमति — राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, राजस्थान।

शोध प्रबंध कार्य करते हुए मेरा शिवानी जी से 139
जो पत्रव्यवहार हुआ उन पत्रों को मैं यहाँ
प्रस्तुत कर रहा हूँ। उन्होंने मेरे पत्रों का उत्तर
दिया मैं उनका आभारी हूँ।

६६, गुलिस्तां कालोनी
लखनऊ

27th Nov 91

प्रिय श्री कावेरा –

'करिए छिमा' लंबी कहानी है। मेरे सभी उपन्यास प्राय: ईमानदारी से लिखे हैं – अपनी कौन सी संतान प्रिय नहीं होती?
फोटो भेजना तो संभव नहीं है, सब ही मांगते हैं – Cash [illegible] – भेजी है

सस्नेह —

शिवानी

६६, गुलिस्तां कालोनी
लखनऊ

22.1.92

प्रिय भाई —

सस्नेह शुभाशीष —

1 — जो समस्यायें पाठकों को कुछ — प्रेरणा दे सकती हैं जिन्हें स्वयं अनुभव किया है, उन्हीं को चित्रित करने की चेष्टा की है। —

2 — खाना बना ही लेती हूँ, शौक भी था क्योंकि, खाने वाले भी थे अब खाने वाले ही नहीं रहे तो — किसके लिये बनाऊँ ?

3 — मेरे पति की तिथि ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी 25th May 1974.

तस्वीर भेज रही हूँ

सस्नेह

शिवानी.

डॉ. पुष्पपाल सिंह

1/6/92

हिन्दी विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

प्रियवर साकेत !

आपका पत्र अभी मिला, उत्तर तत्काल दे रहा हूँ।

(1) लघु उपन्यास और कहानी के अंतर को पत्र के सीमित कलेवर में स्पष्ट करना कठिन है. उपन्यास मूलतः बहुआयामी है- अपनी लघुता में भी, कहानी एकआयामी। आप विश्वकोश- ब्रिटेनिका, अमेरिकाना, आदि देख लीजिए, उनमें ~~Novelle~~ 'Novelett' नाम से लघु उपन्यास पर।

(2) लघु उपन्यास पर पुस्तक रूप में डॉ० घनश्याम मधुप का शोध प्रबन्ध है।

(3) हिंदी का पहला उपन्यास (जो लघु उपन्यास ही है) पं. गौरीदत्त का 'देवरानी जिठानी' की कहानी।

(4) ~~[illegible]~~ पर मेरी जानकारी में कोई आलोचना नहीं है।

शुभाकांक्षी
पुष्पपालसिंह